International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-06-2023, Accepted: 27-06-2023, Published: 13-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 11-13

प्रकृति के सजग चितेरेः कवि सुमित्रा नन्दन पंत

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पी. एस. एम. (पी. जी.) कॉलेज, कन्नौज, केरला, भारत

सारांश
सुमित्रानन्दन पंत छायावादी काव्यधारा के प्रमुख चार स्तंभों में प्रमुख जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा आदि में से एक माने जाते हैं। उनके काव्य में प्रकृति का अद्भुत चित्रण हुआ है। इसका श्रेय उन्होंने प्रकृति के निरीक्षण एवं अपनी जन्मभूमि प्रदेश कुमांचल को माना है। उन्होंने बताया है कि मनोरम एवं हरि–भरी प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण वातावरण का प्रभाव मन पर पड़ना स्वाभाविक होता है। यह वातावरण मनुष्य के व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करता है। सुमित्रानन्दन पंत की प्रकृति जड़ नहीं अपितु चेतन होने के साथ – साथ मानवीय भावना के सरोकारों से ओत – प्रोत प्रतीत होती है। इस शोधपत्र में उनकी प्रकृति सम्बन्धी कविताओं के प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करना है कि उनका प्रकृति चित्रण कितना सजग, अभूतपूर्व एवं अनोखा है।

मूल शब्दः मानवीयकरण & Humanization, शीतल पवन & Child wind, पलनों में & In the cradles, मृदु & Tender, बेसुध & Insensitive, मांसल & Flashy, विस्मृत & Forgetfulness, सुनागरिक &Good citizen, प्रफुल्लित & Cheerful

प्रस्तुत शोधपत्र को लिखने के लिए तथा शोध को अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

सुमित्रानन्दन पंत छायावादी काव्यधारा के अनूठे कवि हैं। इन्हें छायावाद का चौथा स्तम्भ माना जाता है। आपका जन्म 20 मई 1900 उत्तर भारत में कसौनी, अल्मोड़ा में हुआ था। कसौनी जनपद प्रकृति की सुंदरता के बीच बसा हुआ है। पंत जी के जन्म के छः घंटे बाद ही इनकी माता इस दुनियॉ को छोड़कर स्वर्ग सिधार गई थीं। इस घटना का प्रभाव इनके चिर कुमार जीवन बहुत गहरा पड़ा। इसके बाद इनका पालन पोषण इनकी दादी जी ने किया था। छायावादी काव्य की विशेषता यह रही है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता इस धारा के कवियों ने स्वछन्द कल्पना के लिए प्रकृति का सहारा लिया है। पंत के काव्य में प्रकृति के लिए प्रेम और कल्पना की ऊँची उडान है।

छायावाद के चार कवि प्रमुख माने जाते हैं। जिनमें जय शंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा का परिगणन किया गया है। पंत ने स्वयं लिखा है – कविता की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति के निरीक्षण से प्राप्त हुई है। इसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कुमांचल (अल्मोड़ा, वर्तमान उत्तरांचल में) प्रदेश को है। कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है कि मैं घंटों बैठकर प्रकृति के दृश्यों को एकटक देखा करता था। ऐसा प्रतीत होता है कि मॉ की ममता से रहित उनके जीवन में मानो प्रकृति ही उनकी मॉ हो। उत्तर प्रदेश के अल्मोडा के पर्वतीय अंचल की गोद में पले और बडे हुए। पंत ने स्वयं स्वीकार किया है कि प्रकृति के मनोरम वातावरण से उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

सुमित्रानन्दन पंत की प्रमुख रचनाओं का क्रम इस प्रकार हैः 1. वीणा – 1919, 2. ग्रन्थि – 1920, 3. पल्लव – 1926, 4. गुंजन – 1932, 5. युगान्त – 1937, 6. युगवाणी – 1948, 7. ग्राम्या – 1940, 8. स्वर्ण किरण – 1947, 9. स्वर्ण धूलि – 1947, 10. उत्तरा – 1949, 11. युग पथ – 1949, 12. चिदम्बरा – 1958, 13. कला और बूढा चॉद – 1959, 14. लोकायतन – 1964, 15. गीतहंस – 1969, 16. कहानियॉ पांच – 1938, 17. उपन्यास हार – 1960, 18. आत्मकथानक संस्मरण – साठ वर्ष : एक रेखांकन – 1963. तथा सुमित्रानन्दन पंत को प्राप्त पुरस्कारों में 1 पद्मभूषण – 1961, 2 ज्ञानपीठ – 1968,3 कलाओं और बूढा चांद के लिए–साहित्य अकादमी पुरस्कार 4 लोकायतन एवं सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, 4 चिदम्बरा पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार। कौसानी चाय बागान के व्यवस्थापक में जन्में सुमित्रानन्दन पंत की मृत्यु 28 दिसम्बर 1977 को इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में हुई।

सुमित्रानन्दन पंत का प्रकृति के साथ चित्रण अभूतपूर्व दृष्टिगोचर होता है। झरना,बर्फ,पुष्प, लता, भंवरा, गुंजन, उषा किरण, शीतल पवन, तारों की चुनरी ओढे गगन से उतरती हुई सन्ध्या इत्यादि सभी सहज रूप से काव्य के उत्पादक बने हैं।

मानव कविता में कवि पंत ने प्रकृति के सौंदर्य का दर्शन समग्र जीवन के रूप में करते हैं।

सुन्दर है विहग सुमन सुन्दर।
मानव! तुम सबसे सुन्दरतम।।[1]

प्रकृति का मानवीकरण छायावाद में विशेष कहें तो अनुचित नहीं होगा। यह मानवीकरण भी नारी के रूप में हुआ है। प्रकृति ने कवि के लिए मॉ, सखि, प्रेयसी जैसी उपमाओं से कहकर कविताओं की रचना करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड प्रकृति से भी माया
वाले। तेरे बाल–जाल में
कैसे उलझा हूँ लोचन
भूल अभी से इस जग को"।।[2]

उनकी कविताओं में प्रकृति साकार उठी सी प्रतीत होने लगती है। जैसे :–

"सिखा दो ना हे मधुप कुमार
मुझे भी अपने मीठे गान।
कुसुम के चुने कटोरों से
करा दो ना कुछ कुछ मधुपान"।।[3]

सुमित्रानन्दन पंत के स्वच्छन्द कविता संग्रह में छेनुए कविता के अंर्तमन नदी का वर्णन अद्वितीय है। नदी की तीव्र गति को

देखकर मानव मन मचल और आनन्द विभोर हो उठा सा प्रतीत होता है।

"ओ रंभाती नदियों / बेसुध कहॉ भागी जाती हो।
वंशी – रव / तुम्हारे ही भीतर है जो फेन–गुच्छ।
इस पान उस पार भी देखो / जहॉ फूलों के कूल
सुनहले धान के खेत हैं / प्रीति –कथा कहते मत चली जाओ"।।[4]

कवि नदियों को गायों के रूप में चित्रित करता है और साथ ही उन्हें अंधी होकर प्रवाहित न होने को कहता है तथा धान और फूल का सौन्दर्य भी देखने को कहता है। निरू उद्देश्य भागते रहना अर्थहीन है।
प्रस्तुत बादल कविता की पंक्तियॉ पंत जी की सौन्दर्य को निहारने की कला प्र्याप्त सूक्ष्मता रूप में स्पष्ट और प्रकट हुई है उन्होंने सौंदर्य के मनोहारी रूप स्थान प्रकट हुये हैं। उनकी सरलता हृदयंगम करने वाली है। इस कविता में मात्र नदी की ही नहीं, उमंग भर रही है। इसमें अनुभूति की मीठी तीव्रता है।

"जलाशयों में कमल दलों सा
हमें खिलाता नित दिनकर
पर बालक सा वायु सकल दल
बिखरा देता चुभ सत्वर"।
"लघु लहरों के चल पलनों में
हमें भुलाता जब सागर।
वहीं चील सा झपट बॉह गह
हमको ले जाता ऊपर"।। [5]

सुमित्रानन्दन पंत की कवताओं में सर्वाधिक प्रकृति वर्णन ही परिलक्षित होता है। इनके प्रकृति वर्णन में भिन्नता होते हुए भी कोयल और पपीहे की तान ही सुनाई देती है। पंत की प्रकृति जड़ नहीं बल्कि चेतन है। मानवीय भावनाओं से सराबोर हैं।
सुमित्रानन्दन पंत ने प्रकृति के अनेक रूप अपनी कविताओं में प्रस्तुत किए हैं। उतने अन्यत्र प्रतीत नहीं होते हैं। जैसे :

"चंचल पग दीप – शिखा के धर गृह मग वन में आया बंसा
सुलग हागुन का सूनापन, सौंदर्य शिखाओं में अननत।।
पल्लव पल्लव में नवल रूधिर पत्रों में मांसल रंग खिला।
आया पीली – पीली लौ से पुष्पों के चित्रित दीप जला।।[6]

कवि के लिए प्रकृति उत्सव स्थल नहीं बल्कि उसके लिए यह अध्ययन शाला है। वह पकृति के सौंदर्य से ऊर्जा और रस पाता है।

"हे सखि ! इस पावन अंचल से
मुझको भी निज मुख ढूंढकर
अपनी विस्मुत सुखद गोद में
सोने दो सुख से क्षणभर"।।[7]

सुमित्रानन्दन पंत प्रकृति की उपेक्षा न करते हुए उनके सौन्दर्य में नए अर्थ और सार्थकता खोजते हैं। प्रकृति को निहारने का अर्थ केवल कुसुम, मारूत, खग, कुल को निहारने तक ही सीमित नहीं है। अपितु वसुंधरा के हर छोटे बडे जीव को दृष्टि तितली के चटक रंग के साथ धुंधली वाली चींटी पर भी जाती है। सही मायने में यह उनकी विशेषता कही जा सकती है। कवि चींटी की कड़ी क्षमता पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि चींटी निरंतर अपने कार्य में तन्मय अर्थात लगी रहती है। उसका भी अपना घर संसार होता है।

"चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रम जीवी, वह सुनागरिक"।।
विचरण करती श्रम में तन्मय।
वह जीवन की चिनगी अक्षय।।[8]

कवि ने अपनी कलख कविता में वास्तविक एवं सारगर्भित दृश्य चित्रित किया है। वह बॉसों के समूह /झुंड में अर्थात झुरमुट में चहचहाते पक्षियों की आवाजों और भारी पैरों से उदास मन लिए अपने घरों को लौटते श्रमजीवियों की विरोधपूर्ण स्थिति को दर्शाते हुए कवि ने संध्या का अत्यन्त व्यंजक चित्र प्रस्तुत किया है।

बॉसों का झुरमुट।
संध्या का झुरमुट।
हैं चहक रही चिडियॉ
टीवी टी – टुट टुट
कुछ श्रमजीवी, धर डगमग डग
मानती है जीवन! भारी पग।।[9]

सुमित्रानंदन पंत अपनी रचना ग्राम्या में ग्राम जीवन के अद्भुत रंगचित्र प्रतिपादित किए हैं जिससे प्रकृति के भी अनेक चित्र सम्मिलित हैं जिसमें ग्राम प्रकृति के अनेक चित्र शामिल किए गए है। पंत जी की रचना ग्राम चित्र कविता में कहते हैं वे अपनी रचना ग्राम चित्र जैसे –

"यह रवि – शशि का लोक–जहॉ हॅसते हॅसते समूह में उडु–गण
जहॉ चमकते विहग बदलते क्षण–क्षण विद्युत– प्रभ बन।
यहॉ वनस्पति रहते रहती खेतों में हरियाली,
यहॉ धूल है, यहां ओंस है, कोकिला आग की डाली।
ये रहते यहॉ और नीला नभ बोयी धरती।
सूरज का चौडा प्रकाश ज्योत्स्ना चुपचाप विचरती।
प्रकृति धाम यह तृण–तृण कण–कण जहां प्रफुल्लित जीवित।
यहॉ अकेला मानव ही रे चिर विषण्ण जीवनमृत"।। 10

निष्कर्ष (Conclusion)

आज साहित्य में छायावादी दौर का भले ही अवसान हो चुका है किन्तु उसके समृद्धशाली दौर को कभी नहीं भुलाया और झुठलाया जा सकता है। इस प्रकार जब–जब छायावादी साहित्य की चर्चा होगी, तब–तब प्रसाद, निराला,महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत को याद किया जाता रहेगा। ये चारों छायावादी साहित्य के आधार स्तम्भ और उस युग के विशेष कवि हैं। जब हिंदी कविता चलने का अभ्यास या इस प्रकार कहें कि चलना सीख रही थी। सुमित्रानंदन पंत ने हिंदी कविता को न केवल सौम्य, सुकुमार और शसक्त भाषा के रूप को प्रतिष्ठित करने के साथ–साथ हिंदी साहित्य के लिए एक नई शैली भी प्रदान की है। उन्होंने आजीवन अविवाहित रहकर साहित्य की सेवा की है।
कवि सुमित्रानंदन पंत की जीवन की पीड़ा के रिश्ते का प्रारम्भ उनके जन्म के कुछ घंटे बाद उनकी मॉ के असमय मृत्यु के रूप में होता है। इनका लालन पालन इनकी दादी मां के द्वारा किया गया था। मॉ के अभाव ने बालक पंत को पिता के कुछ अधिक निकट ला दिया था। उनके पिता चाय के बागानों में प्रबन्धक एवं लकडी का व्यवसाय भी किया करते थे।
सुमित्रानंदन पंत की प्रकृति की निकटता के कारण ही उनकी रचनाओं में पकृति के सौन्दर्य का अनुपम वर्णन परिलक्षित होता है। यही वह प्रमुख कारण है कि उन्हें "प्रकृति का सुकुमार कवि" कहा जाता है। यह सर्वविदित है कि सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख स्तम्भ के रूप में माने जाते हैं। छायावादी कवियों की कल्पनाशीलता देखते ही बनती है। इस संबंध में पंत जी कहा

करते थे कि मुझे प्रकृति का अति निकट सानिध्य मिला है। इस कारण से प्रकृति को घंटों बैठकर निहारा करते थे। यही यह प्रमुख कारण है जिससे प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ। वास्तव में कविता हमारे मनोभावों के ही शब्द चित्र होते हैं। उनकी चयनित कविताओं के अंशों जैसे मोह मधुकरी, धेनुए, बादल,छाया एवं ऑसू कविताओं के माध्यम से पंत जी को प्रकृति के सजग चितेरे कवि के रूप में सिद्ध करने का एक लघु प्रयास मात्र है।

सन्दर्भग्रंथ (Bibliography)

1. पंत, सुमित्रानंदन, आधुनिक कवि–2 साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 12 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद मानव कविता, पृष्ठ सं. 33
2. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवॉ संस्करण 1993 "पल्लव" राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली– 110002, पृष्ठ सं. 84
3. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवॉ संस्करण 1993 "पल्लव" राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली– 110002, पृष्ठ सं. 76
4. वाजपेयी अशोक सं. 2008 पंत,सुमित्रानंदन – "स्वच्छंद", राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली– 110002,पृष्ठ सं. 55
5. पंत, सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली– 110002,पृष्ठ सं. 55
6. पंत, सुमित्रानंदन पंत (2008) नौवॉ संस्करण 1993 युगपथ, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली– 110002,पृष्ठ सं. 13 – 14
7. वाजपेयी अशोक सं. 2008 पंत,सुमित्रानंदन – "स्वच्छंद", राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली– 110002,पृष्ठ सं. 57
8. सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली, खंड 2, वर्ष (2004) राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली– 110002, पृष्ठ सं. 84 – 85
9. पंत, सुमित्रानंदन पंत (1998) युगपथ, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज,नई दिल्ली– 110002,पृष्ठ सं. 20
10. पंत, सुमित्रानंदन, ग्राम्या (2001) लोक भारती प्रकाशन महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–1 कविता ग्राम चित्र, पृष्ठ सं. 39